# धर्म जीवन

## अक्तूबर 2005


- ✡ मैं हूँ आप की बदौलत
- ✡ आत्मिक बेसुधी
- ✡ धर्म का वैज्ञानिक आधार आवश्यक है
- ✡ सत्य धर्म बोध उत्सव से पहले सत्संग
- ✡ सत्य धर्म बोध उत्सव
- ✡ शुभ संग्राम

# मैं हूँ आप की बदौलत

हे! सतगुरू मैं आप की बदौलत हूँ। मैं अपने माता-पिता और अनेक उपकारियों की बदौलत हूँ। यह मैं केवल आप की रोशनी में ही कह सकता हूं। और संसार में ऐसा कोई दर नहीं जहां पर यह बात सोची विचारी जा सकती हो। मैं आप की बदौलत हूं क्योंकि आपके सेवक जो श्री मान नवनीत जी तथा श्री मान जवाहर लाल जी के स्नेह सत्कार के कारण हूं। इस दर का पता देने वाले श्री अमर नाथ सिंगल जी श्रीमान वर्मा जी और श्री मान बलदेव सिंह तथा श्री मान निर्मल सिंह जी के कारण हूं।

इस दर से अनेक बरकतें पाई हैं, अपनी अयोग्यता तथा स्वेच्छाचारिता के कारण मैं इस दर से कोई लाभ नहीं उठा पा रहा हूं यह मेरे नकारात्मक स्वभाव के कारण है। मेरा विषय अर्न्तमुखी है। आप की रोशनी को प्राप्त न कर सकने के कारण है, धर्म सम्बन्धियों से उचित मार्ग दर्शन से अपने आप को अलग रखना-स्वार्थ और दुनियादारी में डूबे रहना। हे सतगुरू! आप की रोशनी प्राप्त करना मेरा लक्ष्य नहीं बन सका। दुनिया परस्ती में रहते, दुःखी होना, बिमार मान्सिकता से रोगी होना, तनाव और दबाव में रहना मेरे अपने आप पैदा किए हुए कारण हैं। मेरे माता जी यदि मुझ से कुछ प्रसन्न हैं तो यह आपके कारण है। मैं बहन भाईयों के लिए कुछ कर पा रहा हूँ तो आपकी रोशनी के कारण। काश! मुझे बल मिल सके। मेरे आत्मा का बल बढ़े तो मैं आपकी रोशनी में अपनी आत्मा की मैल धो सकूं। नकारात्मक सोच सकारात्मक सोच में बदल सके।

हे! सतगुरू आज भी सभा में बैठे हुए ध्यान आया कि मैं हूं केवल आपकी बदौलत वरना मेरी मिट्टी भी न मिलती, मेरे उन साथियों की तरह जो समय से पहले ही दुनियां छोड़ गए:-

**गुरमीत सिंहः –** तलवंडी भाई हायर सेकैंड्री स्कूल में पढ़ते हुए हमारे प्रिंसीपल का सम्बन्धी लुधियाना से पढ़ने आया। यह मेरा सहपाठी और मित्र था। लुधियाना में पढ़ने लगा। पढ़ाई पूरी करके यह मैकेनिक बन गया। शराब पीने लगे और लगभग 7-8 वर्ष पहले शराब नोशी के कारण बुरी अवस्था में घिर कर मर गया। अपने बच्चों को अनाथ, पत्नी को विधवा और माता-पिता को दुःखों के सागर में गोते खाने के लिए छोड़ गया।

**बलबीर सिंहः –** यह भी मेरा सहपाठी और मित्र था। इसकी Interview थी और B.Ed का कान्फीडैंशल रिज़ल्ट मैने यूनिवर्सिटी से लाकर दिया। यह अध्यापिक नियुक्त हो गया। फिर जलालाबाद की तरफ हैड मास्टर बन गया। शराब पीकर धुत शराबी बन गया। वह भी 30-32 वर्ष की आयु में गुर्दे फेल होने के कारण मां-बाप, बच्चों तथा पत्नी को दुःखों के संसार में भटकने के लिए छोड़ गया।

**सवितोज (दुर्गादत्त) :–** मैं पटियाला यूनिवर्सिटी में पढ़ने लगा तो यह मेरी पहचान का लड़का ड्रामा, स्पीच Deptt. में पढ़ता था। मुझे इसने कैंटीन में चाय पीते समय Four Square की सिगरेट लाने के लिए कहा। मैंने एक की जगह चार ला दी। यह जालन्धर दूरदर्शन में एक बड़ा अफसर बन गया। वहां रिश्वत और मुफ्त की शराबों में उलझ कर कैंसर का शिकार हो गया। सन् 1998 में मुंह के कैंसर के कारण उसका मुंह नहीं खुलता था। सन् 1995 में जालन्धर में एक प्रोग्राम के दौरान मैंने उसे शराब न पीने के लिए कहा तो कहता तुम बूढ़े हो गये हो। उपदेशक बनते हो। अन्त में वह मौत का निवाला बन गया।

मेरे और अनेक मित्र नशों, विषयों में भटक कर दुनियां छोड़ गए। आप की संगत में न आया होता तो उपरोक्त मित्रों की तरह मैं भी इसी हाल में इधर-उधर भटक रहा होता, होता भी कि न, निश्चित नहीं।

''शरण तुमरी न आता मैं, तो क्या होता कहां होता?''

**बिपन कुमार**

# धर्म जीवन

खण्ड 17 अंक 6
अक्तूबर 2005
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़


# आत्मिक बेसुधी

बेसुधी व बेहोशी बहुत भयानक अवस्था है। यह मनुष्य के दिल दिमाग की उस सुन्न व धुन्ध अन्धेरी अवस्था का नाम है, जिसमें मनुष्य को अपना बड़े से बड़ा घाटा, हानि, पीड़ा या नुकसान दिखाई नहीं देता। उसको कोई पता नहीं लगता व कोइ एहसास नहीं होता। शारीरिक बेसुधी में मनुष्य को अपनी भयानक से भयानक हानि का कुछ भी पता नहीं चलता। उसका थोड़ा-बहुत भी एहसास नहीं होता। शारीरिक बेहोशी, आम करके, नशे में जहरीली गैस के जहर के सेवन के कारण हो जाती है।

एक नए विवाहित डाक्टरों की जोड़ी हनीमून के लिए शिमले गई व एक अच्छे होटल में ठहरी! रात को लेट सोने के कारण, बावजूद बताने के, कोयले की अंगीठी को कमरे से बाहर करना भूल गए। आपको जल्दी नींद आ गई। कोयले की अंगीठी सुलगती रही व जहरीली गैस, Carbondia-oxide छोड़ती रही। इस गैस का कमरे में भर जाने से डाक्टर जोड़ा इस जहरीली गैस में साँस लेते-लेते, सोते-सोते बेहोश, ओर गहरा बेहोश होता गया व अन्त में मौत का शिकार हो गया।

एक बजुरग ने अपनी शारीरिक बेहोशी बारे, होश आने के बाद बताया कि आप एक जीप चला रहे थे जो पहले दिन भी लगभग 15 किलोमीटर चला कर एक गांव में पहुंचे थे। अगले दिन उन्होंने फिर लगभग 15-18 किलोमीटर जीप चलाई। परन्तु जीप चलाते चलाते उनके दिमाग की नाड़ी के अन्दर खून का Clot कुछ समय के लिए रुक गया, जिसके कारण आप बेहोश हो गए। उनका जीप पर कोई Control नहीं रहा। अचानक वह एक चौराहे पर पहुँचे जहां पर उनका एक ट्रक के साथ accident हो गया।

ट्रक ने उनकी जीप को लगभग 200 फुट तक पीछे घसीट दिया। बाडी पूरी तरह धंस चुकी थी व बजुरग ड्राइवर बीच में दब चुका था। आस-पास में लोगों व पुलिस वालों ने इक्ट्ठे होकर जल्दी से उस बजुरग को बाहर निकाला व उस को खड़ा करने की कोशिश की गई व उनसे पूछा गया कि आपने कहाँ जाना है। इस समय तक उनको कुछ होश आ गई थी। उनको जब बताया गया कि उनका तो Accident हो गया है तो उन्होंने ने आंखे खोलते हुए अपने आप को खून से लथ-पथ, कन्धे के पीछे जोर का दर्द व जीप को पलटा हुआ देखा। बजुरग का कहना था कि उनको कोई पता नहीं रहा कि वह जीप चलाते-चलाते बेहोश हो गए। जीप का कब Accident हुआ, कब उनको चोटें आई व किसने उनको निकाला उनको कुछ पता नही रहा। कितने बड़े खतरे का व शारीरिक

हानि का बेसुधी की हालत में कोई पता नहीं लगा जो कि होश आने पर सब पता चल गया। बेहोशी कैसी भयानक अवस्था!

शारीरिक बेहोशी की तो फिर भी मनुष्य को होश आने पर समझ आ जाती है कि मैं किस हालत में से गुज़रा हूँ परन्तु आत्मिक बेहोशी इससे भी कहीं अति भयानक है।

मनुष्य सुखों का लालसी है। उसके सब नीच सुखों की लालसा उस के अन्दर अन्धेरा व बेहोशी पैदा करती है। नीच सुखों का लालसी होकर वह शारीरिक हानि को या तो देखता ही नहीं या अगर देख भी ले तो उससे बेपरवाह व ग़ाफल रहता है। नशे, विषय, स्वाद, आलस्य व धन की लालसा मनुष्य को अपने शरीर की हानि से भी बढ़कर बेसुध रखती है।

मनुष्य केवल शरीर ही नही, वह आत्मा भी है। आत्मा ही मनुष्य अस्तित्व में मुख्य, मूल, असल व सार वस्तु है। आत्मा को लेकर ही मनुष्य जीवन की सारी लीला है।

मनुष्य का विकास भले ही पशुओं से हुआ है व मनुष्य मान्सिक पक्ष से बेहद प्रगति प्रगति कर चुका है व कर रहा है परन्तु जहां तक आत्मिक होश का सवाल है, मनुष्य अभी भी बहुत पक्षों में पशुओं के नज़दीक है, वह अपनी मुख्य हस्ती आत्मा के प्रति जागृत नहीं हुआ। वह अभी तक बहुत पक्षों में बेसुध है। वह अपने शारीरिक सुखों को लेकर ही जीता है। मानसिक विकास की तह में भी उसमें शारीरिक सुखों की प्राप्ति ही काम करती है।

मनुष्य अपनी रुचियों की तृप्ति चाहता है। उनकी तृप्ति की पूजा उसको अपनी हानि से बेसुध करती है। शारीरिक हानि के इलावा उस मुख्य व सार हस्ती आत्मा की हानि भी, नीच रुचियों की तृप्ति से होती है। इस के विषय में वह पूर्ण रूप से बेसुध व अन्धेरे में रहता है। आत्मा की हानि लाभ के विषय को ही, उसकी रुचियां उस की पहुँच से परे रखती हैं।

उच्च भावों की हानि ही मोटे तौर पर आत्मा की हानि है। उच्च भावनाओं के नाश से आत्मा बलहीन व दुर्बल होता है व पूर्ण नाश के राह पर पड़ जाता है। आत्मा का नाश सर्वनाश का प्रतीक है।

नीच रुचियों का दास बन कर मनुष्य अपनी शारीरिक व आत्मिक हानि करता है। नीच रुचियों के मोटे-मोटे (दूसरों को छोड़कर) चार-पांच विषय है। स्वाद-दायक वस्तुएँ खाने का, नशों के सरूर का, सैक्स का व धन-धरती की प्राप्ति का। जितना भी मनुष्य उपरोक्त विषयों का गुलाम बनता जाता है, उतना ही वह अपने आत्मा की महा-हानि से बेसुध होता जाता है। उपरोक्त रुचियों की ललक की पूर्ति उसको खास जीवन की उपलब्धि अनुभव होती है। किसी प्रकार की भी हानि या हो रहे घाटे का उस को कोई दुख नहीं होता। यह आत्मिक हानि से बेसुधी व बेहोशी ही आत्मिक-बेसुधी है। इससे अरबों लोग शिकार हैं। वह अपनी नीच सुखों की तृप्ति में ही मस्त रहते हैं। अपनी महा हानि, आत्मिक हानि से अन्धे होकर खुशी व तृप्ति पाते हैं। आत्मिक हानि की बात करने वाले को वह मुर्ख व गुमराह समझते हैं।

जो लोग उपरोक्त चार-पांच रुचियों के ज्यादा गुलाम व शिकार नहीं भी होते, वह भले ही साधारण रूप से अपनी ज्यादा आत्मिक हानि का नियम पूरा नहीं करते परन्तु वह भी अपनी आत्मिक हानि लाभ से बेसुध ही रहते हैं। वह अपनी उपरोक्त नीच रुचियों से सुरक्षित हो कर भी, एक-एक पक्ष में भले का काम करके भी आत्मिक-बेसुधी के पूरे शिकार रहते हैं। वह अपने आत्मिक अस्तित्व के प्रति जागृत नहीं होते। उनके अन्दर ज्यादा हानिकारक रुचियां भले इस अंश सक्रिय नही परन्तु वह भी आत्मिक हानि के (चाहे धीमी गति से) शिकार रहते हैं।

उच्च व भली मनोवृतियां व भावनाएं ही

मनुष्य को शिष्ट, श्रेष्ठ, सभ्य, हितकर व महान बनाती हैं। वही मनुष्य का आध्यात्मिक विकास करती हैं। वह ही आत्मिक बल वर्धक है। वही आत्मा को चिरंजीवी बनाती है व उसका विकास करती हैं। वही मनुष्य को नेक, उच्च, हितकर, सेवाकारी व धार्मिक बनाती हैं। उच्च भावों के नाश से आत्मिक जीवन का नाश होता है। आत्मिक हानि से बढ़कर मनुष्य के लिए और कोई हानि नहीं। इसलिए आत्मिक बेसुधी से भयानक और कोई बेसुधी नहीं।

उपरोक्त नीच रुचियों से बच कर, एक व दूसरे भले, परसेवा के कभी-कभी काम करके, शरीफ व भला होकर, दूसरों की मोटी-मोटी हानि न करके भी मनुष्य आत्मिक पक्ष से बेसुध रहता है। जितनी देर वह अपने सत्य अस्तित्व शरीर की तरह, अपने सत्य आत्मिक अस्तित्व आत्मा को देखता व अनुभव नही करता, उसके जीने-मरने को, लाभ-हानि को, अनुभव नहीं करता, तब तक वह आत्मिक बेहोशी का ही शिकार रहता है।

उच्च व भली मनोवृतियां व भावनाओं की ज़रूरत के एहसास से आत्मिक सोझी का सम्बन्ध है। उच्च भावनाओं की मौजूदगी, आत्मिक बेसुधी को दूर करती है। जब तक किसी मनुष्य के अन्दर, अपनी उच्च व हितकर मनोभावनाओं का एहसास नहीं जागता, तब तक उस के अन्दर आत्मिक बेहोशी का एहसास नहीं जागता। उच्च भावों की हानि का एहसास, व उनके विकास की जरूरत के एहसास से आत्मिक होश का एहसास जुड़ा हुआ है। जो मनुष्य अपने उच्च भावों की रक्षा के विकास का कोई फिक्र, कोई इच्छा नही रखता, वह आत्मिक बेसुधी का शिकार रहता है।

उच्च, व हितकर मनोवृतियों की उपस्थिति, उनकी रक्षा व विकास आगे चार बातों से जुड़ी हुई है:-**पहली चीज** वातावरण या संगत है। इसके बिना उच्च भावनाओं का कोई एहसास नहीं जागता व उनकी रक्षा की कोई इच्छा पैदा नहीं होती। जो मनुष्य, चाहे भला व शरीफ कितना ही है, अगर उस को भले, हितकर माहौल की तलाश नहीं रहती, उसकी जरूरत नही महसूस होती व भले वातावरण की, भले व उच्च महान पुरूषों की संगत की जरूरत महसूस नहीं होती व भले वातावरण वे संगत के लिए कोई रुचि नहीं रखता तो वह पूर्ण बेहोशी का शिकार है।

**दूसरी बात** है उचित सहायक व हितकर अध्यापिक। महान जीवनियां, भली मनोवृतयां के ज्ञान से भरा साहित्य, सच्चे, सुनहरी कारनामों का अध्ययन ही आत्मिक बेसुधी की दवा है। इसलिए उपरोक्त हितकर साहित्य के अध्ययन की लगन से खाली मनुष्य आत्मिक-होश से खाली होता है।

**तीसरी बात** है उच्च व हितकर मनोवृतियां व भावनाओं की तृप्ति के साधन! उच्च भावनाओं की वृद्धि की गतियां, और पर सेवा की गतियों के बिना पर सेवा का भाव बढ़ नहीं सकता। उच्च व महान भावधारी महान जीवनों के बिना, उनके प्रति झुके बिना, महानता देखने की आँख रोशन हो नहीं सकती। दूसरों ने हमारे लिए क्या किया है, यह देखने व जानने व महसूस करने के बिना, उनका कर्ज़ा उतारने की इच्छा पैदा नहीं होती। इसलिए इन भले साधनों के करने की रुचि होना अति जरूरी है। इस रुचि से जो मनुष्य खाली है, वह बिल्कुल आत्मिक बेहोशी की हालत में है।

**चौथी बात** जो आत्मिक-बेहोशी को दूर करती है, वह है इस विश्व के प्रति हितकर क्रियाएं। विश्व के नाना अस्तित्वों के काम आने की व उनके लिए लाभदायक बनने की लालसा व पर सेवा की तड़प के बिना भी आत्मिक बेहोशी दूर नहीं हो सकती।

इसलिए वही मनुष्य आत्मिक बेहोशी से ऊपर हो सकता है व होता है जो अपने अन्दर उच्च, महान व हितकर मनोवृतियां की उपज व प्रगति का सच्चा

चाहवान हो जाता है। उपरोक्त मनोवृतियां के साथ आत्मा का बल, जीवन व मौत जुड़े हुए है। जिस मनुष्य को अपनी खुराक की तरह, उपरोक्त उच्च भावनाओं की कोई भूख नही लगती व उसके जीवन में यह चारों बातें स्थाई रूप से जब तक पूरी नहीं होती तब तक मनुष्य भला, मुफीद व शिक्षित व किसी अंश तक हितकर हो कर भी आत्मिक मदहोशी व आत्मिक बेसुधी का शिकार रहता है।

जहां पर उपरोक्त उच्च व भली भावनाओं की उत्पत्ति व विकास करने का विधिपूर्वक कोई ठोस संग्राम रहता हैं वहां आत्मिक बेसुधी कभी कदम नही रखती। इस आत्मिक बेसुधी व बेकरारी को दूर करने के लिए मनुष्य को इसके लिए संग्राम की कितनी आवश्यकता है, इस को दर्शाने के लिए शब्द पूरी तरह इन्साफ नहीं कर सकते।

उच्च शिक्षा प्राप्त, शिष्ट व सभ्य, सफाई, तरतीब का जीवन जीने वाले नए साहित्य, पुस्तकों व अखबारों का अध्ययन करने वाले, कभी-कभी अच्छे काम करके भी तृप्ति पाने वाले, मानव समाज में एक-एक पक्ष में दक्ष माने हुए जन भी आत्मिक बेसुधी के शिकार रह कर जीवन व्यतीत कर जाते हैं।

***बलदेव सिंह***

# धर्म का वैज्ञानिक आधार आवश्यक है।

वर्तमान युग में धर्म के नाम पर जितने पाखण्ड, जितनी ग़ल्त धारणाएं जोड़ी गई हैं, वह पहले नहीं थी। धर्म को अपने स्वार्थ के लिए प्रयोग किया जा रहा है। राजनीति में धर्म की आड़ लेकर भोले-भाले लोगों की भावनाओं को भड़काया जाता है। दंगे करवाए जाते हैं आगजनी की घटनाएं होती हैं। अपने ही देश की सम्पदा को नष्ट कर दिया जाता है। धर्म को कायम रखने के लिए अन्ध विश्वासों का ऐसा जाल बुना जा चुका है कि उस चक्रव्यूह से निकलना असम्भव के करीब है।

अमरीका जैसे विकासशील देश में भी हमारे भारतीय चैनलों पर ज्योतिष आदि के नाम पर इस प्रकार की Advertisments आती हैं कि लोगों को आकर्षित करके उनसे खूब धन बिटोरा जा रहा है।

सुख और दुख तो जीवन के दो पहलु हैं, परन्तु दुख के समय जो भी उसे दूर करने का लालच दे देता है, मनुष्य उसकी ओर खिंचा चला जाता है। ज्योतिषी बार-बार यह कहते हैं कि सात दिन के अन्दर आपकी सब समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

दुर्भाग्य से धर्म के ठेकेदार धर्म को प्रेम, सद्भाव और शान्ति बढ़ाने के स्थान पर भ्रम फैलाने में, तोड़-फोड़ करने, नफरत फैलाने के लिए प्रयोग में ला रहे हैं। धर्म ने मनुष्यों के हृदयों को इतना संकीर्ण बना दिया है कि वह अपने धर्म के विरूद्ध सच्ची से सच्ची बात को सुनने के लिए तैयार नहीं। धर्म मनुष्य को भीरू भी बना देता है।

इस समय ऐसे ज्वंलत मुद्दे उठने चाहिए कि धर्मों के दिन पर दिन उन्नति करने के बावजूद इतना पाप, अपराध क्यों बढ़ रहा है? क्यों मासूम बच्चियों के साथ बलात्कार होता है? क्यों धर्म के स्थानों पर अथाह धन के अम्बार हैं और गरीब भूख से मर रहे हैं। क्यों बड़े-2 धनवान मन्दिरों को धन देते हैं और गरीबों के लिए रोटी, कपड़ा और

मकान नहीं देते? इसलिए कि उन्हें धर्म की सही परिभाषा ही पता नहीं। आज सारे मन्दिरों, गुरूद्वारों का धन इकट्ठा करके यदि ज़रूरत मन्दों पर लगा दिया जाए, बिजली, पानी की समस्या हल करने पर लगा दिया जाए तो हमारे देश की गरीबी दूर हो सकती है और लोग खुशहाल हो सकते हैं। धार्मिक पुस्तकों की ऊलजलूल बातों पर धर्म को अधारित माना जाता है। प्राचीन काल में जब धार्मिक किताबें ही नहीं थी, तो क्या सब लोग अधर्मी थे? हज़ारों साल पहले जब कोई मन्दिर, मस्ज़िद, गुरूद्वारा नहीं था, तो उस समय लोग आज से अधिक सुखी और सन्तुष्ट थे। यदि ईश्वर मन्दिरों में है, वो अपने दर्शन करने वाले भक्तों के साथ वह दुर्घटनाएं क्यों होने देता ह? अगजनी से खुदा अपने भक्तों की रक्षा क्यों नहीं कर सका? यह प्रश्न अन्धविश्वास उठने ही नहीं देते।

हमारी 12 – 13 वर्ष की बच्ची अमरीका के एक बहुत अच्छे स्कूल में पढ़ रही है। बाईबल के Period में अध्यापिका यह समझा रही थी कि जो ईसा मसीह पर विश्वास नहीं रखते, वह सब नर्क में आता है। जब बच्चों से इसके विषय में पूछा गया, तो हमारी बच्ची ने यह प्रश्न कर दिया कि मैडम जिन लोगों को ईसा मसीह के विषय में कोई जानकारी ही नहीं, तो वह कैसे विश्वास कर सकते हैं, उनका क्या कसूर है कि वह नर्क में जाएं, यह कसूर तो उनका माना जाएगा, जिन्होंने उन्हें ईसा मसीह के विषय में बताया ही नहीं। दूसरा, यदि कोई मनुष्य सारी उमर दूसरों की सेवा करता है और अच्छे काम करता है, जैसा कि ईसा मसीह की शिक्षा भी है तो वह केवल इसलिए नर्क में जाएगा कि वह ईसा पर विश्वास नहीं करता और एक आदमी अपराधी है, पर ईसा पर विश्वास करता है, तो वह स्वर्ग में जाएगा। इसका कोई उत्तर अध्यापिका के पास नहीं था। अब हम सोच सकते है कि धर्म ने मनुष्य के दिमाग़ को किस प्रकार ताले लगा दिए हैं।

अब सब धर्म वाले विज्ञान को नकार नहीं सकते, विज्ञान के आधार पर किसी विषय की परिभाषा एक होती है। हम हिन्दु, ईसाई, सिक्ख होने से पहले इन्सान हैं, हमारे भीतर विकासशील बुद्धि शक्ति हैं। उसका प्रयोग धर्म में क्यों नहीं करते? अब समय आ गया है मन्दिर, मस्ज़िद, गिरजाघरों से दूर खुले आसमान के नीचे धर्म और विज्ञान की एक साथ चर्चा हो। स्वार्थ, संकीर्णता और रूड़िवादी विचारों को त्याग कर मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं के आधार पर धर्म और संविधान बनाया जाए जिसे अपनाकर इन्सान पापों, मिथ्याओं से छुटकारा पाया जाए।

परम पू० भगवान देवात्मा ने धर्म और विज्ञान का एक साथ अध्ययन किया और देव धर्म को विज्ञान पर अधारित कर दिया, मिथ्या, झूठ और पाप को मिटाने का बीड़ा उठाया और मनुष्यों के जीवनों के स्तर को सुधार कर उन्हें सत्य रूप से धर्मवान बनाया है। उनका धर्म विश्वास पर आधारित नहीं बल्कि उच्च जीवन पर आधारित है। उच्च भावों को पैदा करना धर्म है, नीच भावों को नष्ट करना धर्म है। क्या हमारे धर्म यह कर पर रहे हैं? नहीं। बल्कि केवल विश्वास करने, नाम जपने से ही मोक्ष मिल सकता है, यह विश्वास मानवता को पाप करने का लाईसैंस दे रहा है। इसलिए पाप बढ़ रहे हैं। इसका एक मात्र हल विज्ञान मूलक धर्म है।

***सुरजीत बराड़***

# सत्य धर्म बोध उत्सव से पहले सत्संग

प्रत्येक वर्ष की तरह सत्य धर्म बोध उत्सव से पहले सत्संग का आयोजन किया गया। पहले सुन्दर कार्ड छपवाकर उचित स्थानों पर भेजे गए। पंजाबी व हिन्दी पत्रिकाओं में समय पर नोटिस दिया गया।

18 सितम्बर 2005 की शाम से सत्संग 3104, सैक्टर 35-डी, खेड़ा साहिब जी के घर के निकट जहाँ पर रविवार को सत्संग किया जाता है, आरम्भ हुआ।

इस विशेष सत्संग से लाभ उठाने के लिए श्रीमान नरेन्द्र दत्त जी धीमान खतौली से, श्रीमान जंगीर सिंह जी केसुपुर से, श्रीमान ओमप्रकाश जी वर्मा साहिब यमुनानगर से पहुंच गए थे। 21 सितम्बर सुबह पद्मपुर से और गज सिंह पुर से डा. मुन्सा सिंह जी के साथ 9-10 जन पहुंच गए। पंचकुला से भी श्री सुशील कुमार व उनके परिवार की एक और स्त्री आ गई। स्थानीय सेवक सेविका भी अच्छी मात्रा में भाग लेते रहे।

सत्संग से पहले 18-डी धर्मशाला में सभास्थान और अन्य जगह की सफाई श्रीमान जगदीश जी कुक्कड़, श्रीमान नरेन्द्र दत्त जी, श्रीमान सुखदेव जी ने मिलकर की।

21 तारीख की सुबह से लंगर का प्रबन्ध भी किया गया। दो जन खाना बनाने के लिए रखे गए। सभा स्थान में बिछाई आदि की गई।

कुछ सभाएं पहले जैसे ऊपर बताया गया है, 35 सैक्टर में की गई। 21 तारीख की सुबह से धर्मशाला में सभाएं शुरू की गई। सभाओं का मुख्य संक्षेप वर्तान्त इस प्रकार है।

18-9-2005 बावजूद जोरदार वर्षा के रविवार को सभा की गई। इसमें अच्छी मात्रा में लोग आकर शामिल हुए। देवस्तोत्र का गान व व्याख्या की गई। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने खेड़ा साहिब के सुझाव अनुसार हाज़रीन से प्रश्न कर-कर उन तक भगवान की शिक्षा पहुंचाने का प्रयत्न किया। इस सभा में सबसे पहला प्रश्न पूछा गया कि शिक्षा क्या होती है? शिक्षा के क्या-क्या लाभ व हानियां है? शिक्षित व अशिक्षित की पहचान क्या है? धर्म क्या होता है व मनुष्य धर्मवान कैसे बनता है? उच्च भावों से धर्म आता है, इसके बारे में बताया गया। नीच भाव क्या होते हैं? किस प्रकार हानि करते हैं? उच्च भावों की प्राप्ति कहां से व किस प्रकार हो सकती है? प्राय: सभी ने दिलचस्पी ली व बात को समझने की कोशिश की।

20-9-05 की शाम की सभा में भी हाज़री अच्छी थी। इसमें श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि दूसरे सब धर्मों से देवधर्म की मुख्य क्या विशेषता है? देवधर्म का लक्ष्य क्या है? इसकी विशेष देन क्या है? नए धर्म की क्या जरुरत थी? इस सब के जवाब में सभापति जी ने बताया कि भगवान देवात्मा से पहले मनुष्य मात्र से किसी इन्सान को रुह का प्रकृत ज्ञान नहीं था व अब भी

धर्मों में रुह का कोई ज्ञान नहीं है। देवात्मा ने विकास क्रम में प्रगट होकर पहली बार इन्सानी रुह को देखा। उन्होंनें बावजूद अनेक धर्मो के अथाह संग्रामों के रुहों को मरते हुए देखा। तब देवात्मा ने मरती रुहों को बचाने का बीड़ा उठाया जो किसी धर्म ने आज तक व अभी तक भी नही उठाया। देवात्मा ने धर्म को आत्मा के ज्ञान और उसके बचाव, विकास अथवा कल्याण के सिवा और कुछ नही बताया। आत्मा के भले के बिना धर्म के जो ढ़ांचे खड़े किए गए हैं वह सब निरर्थक हैं।

21-9-05 को सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने 18-डी धर्मशाला में करवाई। यहां भी 25-30 जन की हाज़री हो गई थी। सभा में हाज़रीन से देवधर्म की वह बातें जो दूसरे धर्मों में नहीं है, पूछी गई। तो हाजरीन ने बड़ी अच्छी ठोस विशेषताएं बताई जिनकी व्याख्या श्रीमान जी ने विस्तार से की।

देवधर्म की शिक्षा विज्ञानमूलक है। दूसरे धर्म मिथ्या कल्पनाओं से भरे हुए हैं।

शाम की सभा में भी हाज़री बहुत अच्छी थी। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और श्रीमती स्नेहलता जी राएपुर रानी शाम की सभा में आकर शामिल हुए और कुछ लोकल जन भी आए। इस सभा में परिवर्तन के नियम को समझाने की कोशिश की गई। लोगों के अस्तित्वों में परिवर्तन आता है जो इस प्रकार उज्जवल रुप से दिखाई नहीं देता, इन्सानी हस्ती में भी परिवर्तन आता है। शारीरिक परिवर्तन दिखाई दे जाता है। चार-पांच साल के बाद बच्चे के भीतर एक और परिवर्तन आता है, वह शिक्षा का परिवर्तन है, यह मानसिक परिवर्तन है। इसके अतिरिक्त इन्सान की हस्ती में और सूक्ष्म परिवर्तन भी आता है, वह हमारे विश्वास, हमारी चिन्ता और विचार, हमारी बोल बाणी और हमारी क्रियाओं के द्वारा आता है, इनसे भावों में परिवर्तन होता है। उच्च भावों के परिवर्तन से हमारी जीवनी शक्ति आत्मा में उच्च परिवर्तन आता है और वह जीने के मार्ग पर चलती है या विकास पथ पर चलती है। अपने परिवर्तन को जानना मनुष्य का बहुत बड़ा सौभाग्य है।

देवधर्म की निम्नलिलिखत विशेषताएँ बताई गई।

1. *देवधर्म विज्ञान मूलक है*
2. *उसका लक्ष्य मरती रुहों को बचाना है।*
3. *भगवान ने प्रचारक को तनख़्वाह देकर प्रचार करवाना मना किया है।*
4. *इस धर्म में ऐसी रोशनी का वितरण होता है जिसमें मनुष्य को कमज़ोरियां नज़र आती हैं।*
5. *सम्बन्धों में एकता व मिठास लाई जाती हैं।*
6. *उच्च भाव पैदा किए जाते हैं।*
7. *यहाँ सुख के लारे नहीं दिए जाते।*
8. *आत्मिक-होश पैदा की जाती है।*
9. *मनुष्य का स्वभाव बदला जाता है।*
10. *यहाँ जात-पात, उच्च-नीच का भेदभाव नहीं।*
11. *कोई जप-तप नहीं सिखाया जाता।*
12. *नीच जीवन मिटाया जाता है।*
13. *परोपकार अर्थात पर सेवा में लगाया जाता है।*

21-9-05 सांय 5.00 बजे यह सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें परिवर्तन के नियम को समझाने की कोशिश की गई। चारों

जगतों में आ रहा परिवर्तन समझाया गया। बच्चे में कैसे परिवर्तन आता है; शिक्षा से परिवर्तन आता है। भावों और स्वभाव में परिवर्तन कैसे आता है, बताया गया।

मनुष्य की जीवन शक्ति में उसके विचार, वचन, विश्वास, और क्रियांए परिवर्तन पैदा करते है। नीच परिवर्तन के जारी रहने से आत्मा हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है।

22.09.05 सुबह 9.30 बजे की सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने धर्म के स्वरुप के बारे में बताया। मिथ्या धर्मों का कल्पित रुप बताया गया। देवधर्म में उच्च भावों का नाम धर्म है। एक-एक सात्विक भाव की महिमा ब्यान की गई। धर्म का लक्ष्य आत्मा की रक्षा और विकास करना बताया गया।

22.09.05 सांय 6.00 बजे श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि धर्म की पहचान सम्बन्धों में होती है। अगर सम्बन्ध मधुर व स्वर्गीय है तो धर्म अवश्य है। निकट के सम्बन्धों में मधुरता, मेल, परस्पर सेवा व सत्कार व त्याग से सम्बन्ध स्वर्गीय बनते हैं। भगवान देवात्मा ने इस पृथ्वी पर स्वर्गीय सम्बन्ध बनाकर स्वर्ग पैदा करना शुरु किया है। श्रीमान भाई अत्तर सिंह जी का रुप पेश किया गया। मानवीय श्रीमान गुरवन्त सिंह जी की कुर्बानी व त्याग को पेश किया गया। शानदार सम्बन्धों के दृष्टांत पेश किए गए।

23.09.05 की सुबह इस सत्संग की आख़री सभा थी। यह भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई।

इस सभा में बताया गया कि देवधर्म में आकर भी सबसे बड़ी व भयानक ग़फलत साधन सभाओं से या प्रभावशाली सत्संग से उदासीन या लापरवाह होना है। इस ग़फलत से इन्सान अपना जीवन बर्बाद कर बैठता है। देवप्रभाव अपने आप इन्सान को नहीं मिलते। सत्संग से ही कुछ रोशनी और बल शुरु में मिल सकता है। सत्संग में बैठते रहने से जो भी किसी का संभव होता है, बन जाता है। जिस प्रकार हरियाली में सैर द्वारा आक्सीजन प्राप्त करते रहने से मनुष्य के स्वास्थ्य में आकाश-पाताल का अन्तर पड़ जाता है। उसी तरह निरन्तर सभाओं और सत्संग में योग देने से अधिकारी मनुष्य को बेहद लाभ पहुंचता है। किसी उमर में भी किसी कारण से सत्संग से वंचित रहना बहुत बड़ी भूल व बदकिस्मती है।

प्राय सभी सत्संग की सभाएं बहुत प्रभावशाली सिद्ध होती रही। दर्जन से ऊपर जन बाहर से आकर और 15-18 के करीब लोकल जन इस सभाओं से लाभ उठाते रहे। एक-एक जन बेवस कहता हुआ पाया गया कि मुझे अपनी नीचता नज़र आती थी। मेरा अपने को जूते मारने को दिल करता था। कितने जनों को सभाओं में धन्य-धन्य होते व महसूस करते देखा गया। भगवान देवात्मा व अन्य सहायकारियों की सहायता से यह सत्संग आत्माओं के लिए काफी लाभदायक प्रमाणित हुआ। शाम से सत्य धर्म बोध उत्सव की कार्यवाही प्रवेश सभा से आरम्भ हो गई।

# सत्य धर्म बोध उत्सव

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी चण्डीगढ़ 18-डी धर्मशाला में अगस्त की बजाय सितम्बर महीने में 23 से 25 सितम्बर तक सत्य धर्म बोध उत्सव मनाया गया। सुन्दर Invitation कार्ड छपाकर और भेजकर साथी-सेवकों को सूचित किया गया। कुछ पत्र लिखे गए व Telephone द्वारा भी प्रेरणा की जाती रही। धर्मशाला की जरुरी सफाई की गई। दो मुलाज़िम रखवकर लंगर जारी किया गया। जरुरी राशन और दूध आदि का प्रबन्ध किया गया। सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान डा. विनोद जी खेड़ा ने करवाई। पंजाब, हरियाणा, यू. पी., राजस्थान, दिल्ली आदि के निम्नलिखित स्थानों से 60 के करीब जन इस उत्सव पर पहुंच गए। दिल्ली, मेरठ, मोदीनगर, खतौली, डबवाली, केसुपुरा, मल्लेका, रायपुर रानी, अम्बाला, मोगा, समराला, कल्याण, गोनियाना मंडी, पदमपुर, गज सिंह पुर आदि-आदि से जन जाए।

**23.9.05 शामः 5.30 बजे प्रवेश सभाः-**

**सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी**

**पहला भजन : ''बिना तुम्हारे सतगुरु, नहीं कोई ठिकाना है''।**

अर्चन, देवस्तोत्र का गान व व्याख्या की गई। सभापति जी ने व्याकुलता से भरकर सहाय प्रार्थना की।

सभापति जी ने बताया केवल ब्रहम सत्य है, बाकी सब माया है। यह बात ठीक नहीं है। सच्चाई यह है कि यह संसार और विश्व सत्य है। ब्रहम मिथ्या है। सत्य धर्म वही हो सकता है, जो मेरे जीवन के साथ सम्बन्ध रखता हो, उसका भला करता हो, उसका ज्ञान देता हो। कोई 84 लाख जूनीयां नहीं है। मनुष्य की जीवन शक्ति मनुष्य का ही स्वरुप बना सकती है। कोइ पुर्नजन्म मुमकिन नहीं है। देवात्मा ने विज्ञानमूलक ज्ञान दिया है। नशे से, बुराईयों से मुक्ति सच्ची मुक्ति है। जूनी से मुक्ति मिथ्या बात है। देवधर्म बुराईयों से मुक्ति प्रदान करता है। नीच गति व उच्च गति क्या होती है? अपने आप को या किसी और अस्तित्व को, ज़िन्दा को या बेजान को पहले से बेहतर बना देना, पुण्य या उच्च काम है। बिगाड़ देना पाप है। आत्मा निर्लेप नहीं है। चोर, डाकू, बदचलन की आत्मा बर्बाद होती है। नेचर के नियमों पर या विज्ञान पर आधारित शिक्षा ही सत्य हो सकती है। देवधर्म Science को Welcome करता है कि मेरे ज्ञान की परीक्षा करो या परख करो। इसलिए यह सत्य धर्म है। सत्य की कसौटियों पर परखा ज्ञान ही सत्य धर्म का ज्ञान होता है। देवात्मा ने लारे नहीं लगाए। देवधर्म में आने के सौभाग्य को पाकर अधिकारी दिल बल्लियों उछल रहे हैं। मुझे यहां आने पर नशों से निजात मिली। मौत से निजात मिली। अपवित्रता से बचाया गया। लड़कियों से बात करने व उन्हें अपनी बच्ची समझकर पढ़ाने के योग्य बनाया गया। दिल की मैल निकालने के लिए देवधर्म ने सच्चा साधन बताया हैं। देवधर्म सत्य है। यह पाने के लिए है। जीवन की सफलता अगर सम्भव है तो इसी जगह मुमकिन है। लाभ उठाने के नियम बताते हुए फरमाया कि वक्त पर आएं, एकाकारी पाकर आएं, निन्दा करने से बचें, सद्गुण चिन्तन और उपकार स्मरण करें। प्रार्थनाशील, नम्रता और दीन होने पर

ही प्रभाव मिलते हैं। स्वार्थ घटाओ, सेवा करो, साधन व पाठ करो। इस सभा में भी बहुत अच्छी हाज़री हो गई थी। प्राय: सारा हाल भरा हुआ था। हाज़रीन सभा से प्रभावित हो रहे थे व खुशी से भर रहे थे। इस सभा से उत्सव का शुभ आरम्भ हो गया। चार-बार जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त की गई।

24.09.05 सुबह 8.00 बजे एक सभा की गई। इसके सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। इस सभा का विषय था:- आत्मा अबोधता की हानियां व आत्म बोध के लाभ। सबसे पहले एक भजन ''मुझ को मेरा बोध कराओ'' का गान हृदयगत भावों से भरकर किया गया।

मनुष्य का विकास पशुओं से हुआ है। इसकी बुद्धि शुरू में लगभग पशु सामान ही थी परन्तु विकासशील थी। बहुत समय के विकास से पत्थर-युग, फिर धातु-युग, फिर भाप-शक्ति का युग आया। सामाजिक विकास से सामाजिक संस्थाए पैदा हो गई। तत्पश्चात् डर व लालच से परिचालत होकर देवी-देवताओं की पूजा धर्म का अंग बन गए। करोड़ों वर्षो के विकास के बाद (शायद अरबों-खरबों) धर्म संस्थाओं के विकास के बावजूद यह संसार नरक का नमूना बना हुआ है। खतौली से एक जन की, श्रीमती भरपूर कौर व श्रीमान अवतार सिंह जी आदि जनों की दुखदायी कहानी का हृदय के गहरे भावों से भरकर वर्णन किया। सारे संसार में ऐसे दु:खों की भरमार है। नेचर ने देवात्मा को पैदा करके ऐसा कहा-नरक से बचने का प्रबन्ध अधिकारी जनों के लिए किया है। इस सभा का विषय इतना ऊंचा है कि सारी उम्र में थोड़ा-थोड़ा समझ आया है। बोध शब्द दिखाई देने का, समझ आने का, महसूस होने का नाम है। यह एक आंख है जो किसी का प्रकृत रुप दिखाती है। पदार्थ का देखना आसान है परन्तु शक्ति का देखना मुश्किल है। शक्ति से आगे जीवनी शक्ति का देखना और भी मुश्किल है। मनुष्य की जीवन शक्ति को देखना व समझना और भी मुश्किल है। सभी धर्मों में किसी ने भी आत्मा का सच्चा ज्ञान नहीं दिया। शक्ति तत्व की अन्धता के कारण ही आत्मिक अन्धता है। धनवान, विद्वान होकर भी आत्मिक अन्धता के लिहाज से मनुष्य पशु के स्तर पर ही जीता है। आत्मा कोई ज्योति वा ब्रह्म स्वरूप नहीं, Flame of divinity नहीं है। भगवान देवात्मा फरमाते हैं कि आत्मा पुत्र, धन-आदि सब चीजों से प्यारी है। इससे हम अबोधी हैं। फसलों का मुरझाना व लहराना नज़र नहीं आता। इसका कारण आत्म अबोधता हैं।

आत्म-बोध में तीन सच्चाईयां नज़र आने लग जाती हैं।

1. *आत्मा शक्तिमय है... इन सच्चाईयों की समझ आने वा महसूस होने से*
2. *शक्ति जो कार्य करवाती है वह नज़र आने से*
3. *इन कार्य या गतियों से क्या नतीजा निकलता हैं इनको समझने से।*

इन तीनों सच्चाईयों का हार्दिक एहसास, हार्दिक समझ ही आत्म-बोध है। यही धर्म है। नशे से प्यार करना आत्मिक अन्धता है। मौत को प्यार करना, आत्मघात करना है। काम अनुराग की गुलामी भी यही कुछ है। नीच सुख मौत के वारंट हैं। धन का प्यार भी मौत का वारंट है। स: गज्जन सिंह अपनी धन की कमाई से पछता रहा था। धन अनुराग पागलपन है। धन अनुरागी परलोक में नहीं जा सकता। अधम लोक में सड़-सड़ कर मर जाता है। जिस प्रकार बन्दर सांप की गर्दन पकड़कर पक्की जगह पर जाकर उसका मुंह घिसा-घिसा कर उसमें आंखे, दांत, मुंह-सिर सब घिसा कर फेंक देता है, उसी प्रकार एक-एक नीच

भाव मनुष्य का यही हाल करता है। आत्म बोध, आत्मा की हानि का बोध, पतन का बोध, परिवर्तन को बोध है। स्वार्थ का घटना-बढ़ना, ईमानदारी का घटना-बढ़ना, पवित्रता का घटना-बढ़ना आत्म बोध द्वारा नज़र आते हैं। अंह का बोध पाना ही आत्म-बोधी होना है। इससे अपनी हानि का बोध व दूसरों की हानि का बोध हो जाता है।

''हम हैं नीच सुखों के दास, तुम्हारा देवलोक में वास,''

''हमारे लिए सहज को किस विध, रूप तुम्हारा सन्मुख लाना,''

''हमने तुम को नहीं पहचाना .....''

आत्म अबोधी के दुख बढ़ जाते है, दु:खों के कारण नज़र नहीं आते। झूठ बोलना बढ़ जाता है। अपने खिलाफ सुन नहीं सकता। देवप्रभावों के मिलने व न मिलने का बोध नहीं होता। नीच गतियां का खराब, बुरा, दुखदाई व हानिकारक होने का गहरा एहसास ही पाप बोध कहलाता है। यह देवज्योति द्वारा ही हो सकता है। हानि बोध से खौफ पैदा होगा, दु:ख व पीड़ा पैदा होगी। श्रीमान कुलदीप सिंह जी कल्याण ने (मांस के बारे), सन्त राम जी गोनियाना ने (शराब के बारे) स: गुरमेल सिंह जी कुहारवाले ने (घर में मांस बनाने के बारे) पाप-बोध की घटनाएं पेश की हैं। ''हमारा सबसे बढ़कर वह सम्बन्धी उच्च जीवन जो देवे दान।''

**आत्म बोध के लाभ: –**

1. *जीवन सफल हो जाता है।*
2. *सच्चे लक्ष्य का ज्ञान व बोध हो जाता है व मिथ्या लक्ष्य से बच जाता है।*
3. *आत्मा का प्रकृत रूप नज़र आता है।*
4. *नीच गतियों से खौफ व पीड़ा महसूस होने लग जाती है।*
5. *नीच शक्तियों का दास नहीं रहता।*
6. *अपने लिए व औरों के लिए हानिकारक बनने की बजाए हितकर वजूद बन जाता है।*
7. *उच्च भावों के हितकर रूप की हृदय में उपलब्धि हो जाती है।*

24.09.05 सभा सांय : 10.00 बजे

सभापति: श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

भजन : मुझे मेरी हालात दिखाओं हे भगवान!

सभापति जी ने तीन कीमती वाक्य बताए।

"love your enemy ''नेकी कर दरिया में डाल;

''हक पराया नानका उस गाय, उस सूर।''

इन उच्च सच्चाइयों का सच्चा एहसास बहुत मुश्किल है। उनकी व्याख्या भी बहुत मुश्किल है। यह सात्विक जीवन के सुनहरी वचन हैं। देवात्मा के आदेश देव जीवन से निकले हैं। वह हमारी समझ व बोध से बहुत ऊंची बात है। आदेशों का पाठ करके समझाने का यत्न किया गया। आत्मा मुख्य है क्योंकि आत्मा ने माता से जीवित पदार्थ लेकर शरीर का निर्माण किया है। शरीर आत्मा का निर्माण नहीं कर सकता। अपने आत्मा के सम्बन्ध में ज्ञान पाने की भली भांत आंकाक्षा पैदा करने पर जोर दिया। अपनी हस्ती के बारे ज्ञान सबसे श्रेष्ठ है। आत्मा व शरीर का सम्बन्ध समझाया गया। दोनों एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। मनुष्य का अस्तित्व हमारे विश्व का एक अंश है वे नेचर के सारे विभागों से जुड़ा हुआ है। इस सत्य को समझाया गया। नेचर का रूप समझाया गया। नेचर का अंश होने का मतलब क्या है। उनके साथ जुड़े हुए होना है कि इसके बगैर हमारा जीवन असम्भव है। इन्सान का जन्म मनुष्यों से होता है व समाज में ही वह प्रतिपालित होता है। मुख्य लक्ष्य के बारे बताया गया। प्रत्येक नीच गति से मोक्ष व प्रत्येक उच्च शक्ति को लाभ करना ही मनुष्य का लक्ष्य है। नीच शक्ति से बचना, उच्च

गति व उच्च भाव पैदा करना लक्ष्य है। उच्च जनों और उपकारियों की बातें श्रद्धा के बगैर समझ नहीं आती। हमारे भीतर सच्चाई व शुभ के प्रति श्रद्धा पैदा होने की जरूरत है इससे जीवन की सच्चाईयां नज़र आ सकती है।

24.09.05 सभापति डा. विनोद जी खेड़ा ने बताया कि भगवान देवात्मा का कारज जितना महान है, उतने ही हम अयोग्य है, उसको फैलाने के लिए। हम सभी बहन-भाई P. H. D. है। हमारी पढ़ाई में भगवान देवात्मा का बहुत बड़ा हाथ है। देवात्मा के देवप्रभावों का कारण सारे विश्व के लिए है। पूरे विश्व में मिथ्या के प्रति जागृति फैल रही है। अगर भगवान देवात्मा के देवप्रभाव मिलते रहे तो इन्सान कोई भी काम करें, उसमें उसकी दुनियां कुछ और ही हो जाती है। मैं कई बार बच्चों की भलाई के लिए ज़्यादा सख़्त बोल जाता हूँ। भगवान देवात्मा के देवप्रभावों ने श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के जीवन में हैरानी भरा परिवर्तन पैदा कर दिया। स: साहिब श्रद्धेय श्रीमान जमीयत सिंह जीके जीवन चरित्र में से उनके शुरू के जीवन के बारे पाठ करके सुनाया। श्रीमान स्वामी गोविन्दराम जी के जीवन चरित्र का जिक्र किया गया। एकता (लड़की) पूजनीय भगवान के देवप्रभावों के कारण बुरी संगत से बचने का इरादा रख कर बच जाती है। स्वामी गोबिन्द राम जी के अन्दर काम वासना सम्बन्धी कमाल का परिवर्तन पैदा हो गया, जब भगवान देवात्मा लाहौर में उपदेश देते थे। उसमें उन्हें शामिल होने का अवसर मिला। एक दम उनके जीवन में विशेष परिवर्तन आया जिसका उन्हे भी बहुत देर बाद समझ आई। भगवान के मिशन के लिए वह सर्मपित हो गए। रायपुर रानी व अम्बाला का बहुत बड़ा प्रचार क्षेत्र उन्होंने ही स्थापन किया। कितने मन्दिर और स्कूल खोले व हरिजन सुधार का काम किया। उनका जीवन देवप्रभावों की साक्षात करामात था। बाद में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देवात्मा के अद्वितीय देव-जीवन पर प्रकाश डाला। उस लासानी जीवन से निकलने वाले प्रभावों रोशनी और तेज के बारे हाजरीन को समझाया और उन प्रभावों की महिमा ब्यान की और इन्सानियत के लिए उनकी आवश्यकता का ब्यान किया।

**श्री विजय कुमार अग्निहोत्री साहिब: –** भगवान देवात्मा ने पिता जी को हमें में देव समाज स्कूल में पढ़ने के लिए प्रेरित किया। पहले मैं Englsih School में पढ़ता था। गुरू महाराज ने किस तरह हमारे परिवार की सहायता की है (रो-रो कर) उसका ब्यान करने की कोशिश की। श्रद्धेय पिता जी की मौत के बाद गुरू महाराज ने मेरी श्रद्धेय माता जी को फरमाया कि बेशक मैं तुम्हारी हर तरह की मदद कर सकता हूँ पर चाहता हूँ कि आप अपने पैरों पर खड़े होकर एक अनोखी मिसाल कायम करें। भगवान देवात्मा के प्रभावों द्वारा ही मैं पढ़-लिख सका व कुछ बन सका। भगवान के चरणों में रहकर Courage मिला है। Service में भी बहुत अच्छी Position रही है। भगवान देवात्मा के एक-एक Lecture से किस प्रकार लोग-प्रभावित होते थे, लाला लाजपतराय जी की घटना का जिक्र किया। गुरू महाराज दैनिक कार्यों में किस प्रकार समय के पाबन्द थे, उनको देख कर लोग अपनी घड़ीयों का समय मिलाते थे। भगवान देवात्मा के चेहरे में बड़ी चमक थी।, जलाल था। (आपका सब ब्यान भरे हुए हृदय के साथ था।

25.9.05 सुबह 8.00 बजे विषय:- भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने व उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज।

**सभापति :** श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

अर्चन, देवस्तोत्र का गान व व्याख्या की

गई। सभापति जी ने भरे दिल से प्रार्थना की। फिर ''मेरे जीवन के दाता, तुम्हारी महान महिमा'' का भजन जगदीश जी ने गाया। श्रीमान बोध सिंह जी, श्रीमान जुली राम जी और श्रीमान हरनाम सिंह जी के शुरू के जीवन की भयानक दशा के बारे बताया गया। श्रीमान नेत राम जी के बारे में बताया गया और नीच जीवन क्या होता है, समझाया गया। एक बहन अपनी छोटी बहन के दहेज को देखकर ईर्ष्या से जल रही थी। नीच जीवन से दु:ख, सन्ताप व पीड़ा का दौर आता है। आत्मा का जीवन नाश होता है। एक जेठानी ने अपनी देवरानी के नए व भरे सन्दूक को ईर्ष्या के कारण आग लगा दी। नीच जीवन मिटाने को किसी धर्म व उसके विश्वासों के साथ कोई टकराहट नहीं आती। सब धर्मों को नीच जीवन मिटाना लक्ष्य बनाना होगा। उच्च जीवन का ही आत्मा का एक मात्र लक्ष्य है। इसके लिए भी धर्मो एक ही होना चाहिए। श्रीमान नौध सिंह जी के भयानक जीवन में परिवर्तन पेश किया गया। स्वार्थ का जीवन, नाश करने का जीवन है। सभापति जी ने अपनी माता जी की आखों में पानी बहने के रोग को लेजर के द्वारा चन्द मिन्ट में नष्ट करने की बात बताकर कहा कि देवात्मा में प्रभाव चन्द मिन्ट में कुछ का कुछ परिवर्तन ला देते हैं। कानूगो जुलीराम जी की रिश्वत चन्द मिन्ट में भगवान की शक्ति ने सदा के लिए नष्ट कर दी। स्वामी गोबिन्द राम के अन्दर की काम वासना को एक सभा में ही नाश कर दिया। आपने अपनी नीच प्रकृति के अन्दर भगवान के चरणों में आने से आए परिवर्तन की शानदार घटना को पेश किया।

देवात्मा में जो प्रभाव हैं वह और कहीं नहीं क्योंकि सत्य अनुरागी व हित अनुरागी और कोई नहीं। डा. श्रीराम जी ने आठ जनों की रकमें जो उन्होंने दी नहीं थी भगवान की रोशनी में नज़र आई व सबकी सब वापिस की। अपनी जयदाद बेच कर दान किया।

हम बाहर से चिकने चुपड़े बने रहते हैं परन्तु अन्दर से नीच होते हैं। यह नीचता भगवान दिखाते है व बाहर निकालते हैं। डा. श्रीराम जी और उनके बेटे के शानदार परिवर्तन का ब्यान किया। मास्टर अवतार सिंह जी का परिवर्तन सुनाया गया। देवप्रभावों की अजब अकसीर है, वह मानों खाक को ज़र कर देते हैं। देवप्रभावों को लाभ करना मनुष्य का परम सौभाग्य है।

*भाव प्रकाश :-*

**बेज़ुरग आसा सिंह जी:-** मुंह काला करने को जी करता है। फिटकार पड़ रही है। (रो-रो कर)

**श्रीमान जंगीर सिंह जी :** 10 सभाएँ सुनी हैं। सभी में मुझे अपनी योग्यता के अनुसार ज्ञान मिला है व भला हुआ है। इस वातावरण में प्रभाव मिलते रहे हैं। श्रीमान सुखदेव जी उपकारी नज़र आ रहे हैं। श्रीमान बलदेव सिंह जी की लम्बी उमर के लिए कामना करता हूं। मेरी नीचता है कि मैं अकेला आया हूं, परिवार को लेकर आना चाहिए था। बहुत दु:ख हो रहा है। श्रीमती जी को लेकर आता तो और भी फायदा होना था। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि जहां भी सभा करवाने के लिए श्रीमान जी जाएंगे वहीं पर पहुंचने का ज्यादा से ज्यादा प्रयास करके शामिल हूंगा। श्रीमति जी को प्रार्थना करके सभा में लाने की कोशिश करूंगा। माता-पिता जी को बहुत दु:ख दिया है। अब गुरू ने उनकी सेवा में लगा दिया है। मैं इस शिक्षा को छोड़ नहीं सकता। श्रीमान जीत सिंह जी हीरा हैं, इससे भी बढ़कर है। मैं इनके उपकार नहीं भूल सकता। मेरी माता जी की बीमारी के दिनों में सेवा में कई दिन तक मदद की है। भगवान के मिशन में हमें सब कुछ मिल सकता है।

**श्रीमान गुरदेव राज जी:–** अपना किसी अंश नीच जीवन सामने आया है। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि इसको मिटाने के लिए संग्राम करूंगा। मेरे में बहुत कमीयां है। गुरू महाराज से बहुत उपकार पाए हैं।

**श्रीमती भरपूर कौर जी:–** मेरे जीवन के दाता! अमृत वर्षा में आकर धन्य-धन्य हो गई हूं। मेरी आत्मा आप सभी का व गुरू महाराज का धन्यवाद करती है। मेरी आत्मा मर जानी थी, अगर कुछ बची है तो गुरू महाराज व उनकी पैदा की गई संगत की कृपा से।

**श्रीमान डा. मुन्सा सिंह जी:–** एक ऐसे साथी को साथ लेकर आया हूं जो नशे के कारण काफी नुकसान उठा चुका है। पंचम शर्मा, जो मेरे साथ आए हैं, परसों से लेकर रात तक इसने कोई नशा नहीं किया। इस Graduate साथी का भला हो सके। मेरी मिथ्या दूर हुई है। धन अनुराग घटा है। कुछ त्याग शुरू हो गया है। अगर मैं साधन के लिए सुबह न उठ सकूं तो तकलीफ होती है। दूसरे काम को छोड़ कर भी साधन करता हूं। छोटे पाप भी नज़र आने लग पड़े है। स्वाद के कारण ज्यादा खा जाना भी पाप लगता है। श्रीमान जी की कृपा का सारी आयु ऋृण नहीं चुका सकता। इन्होने नौ दिन तक घर रख कर, अपने पास से खिला कर मेरा बहुत ही भला किया है। मैं इनका बहुत ज्यादा धन्यवादी हूं।

**श्रीमान दत्ता जी (नए जन):–** मेरी बचपन की ज़िन्दगी बड़ी खराब थी। पिता जी का साया, जब मैं छोटा सा था, उठ गया। माता जी ने बड़ी तकलीफों में से गुज़र कर हमारी पालना की है। अब मैं किसी भी दुखिया माता को देखता हू तो उसका दु:ख दर्द सह नहीं पाता हूं। उनकी मदद करने के लिए दिल मजबूर हो जाता है। कइ बार कुछ कारणों से नहीं भी सेवा हो पाती। पहले शराब-मांस का सेवन करता था। कोई बुरा नहीं लगता था। बचपन में ही मेरे अन्दर इन धर्मो से नफरत हो गई थी। मैं जगरातों में गा देता था परन्तु, मैं साफ कह देता था कि मेरे अनदर कोई इस काम के लिए श्रद्धा नहीं है। तर्कशील सोसाइटी से भी सर्म्पक रहा। खेड़ा साहिब जी का ऋृणी हूं जिन्होंने मुझे सभा के लिए प्रेरित किया। शराब, मांस से बच गया हूं। मैं ज़्यादा से ज़्यादा सत्संग के लिए समय निकालूंगा।

**श्री पंचम शर्मा :–** मुझे यहां पर आकर कुछ शक्ति मिली है। मेरे ऊपर अच्छे प्रभाव पड़े है। मैं नशों से बचा रहूंगा। (वह सभा में देर तक रोते रहे)।

**श्रीमान सुखदेव जी :–** सबसे पहले तो मैं अपनी खुशी का प्रकाश करता हूं कि 18 तारीख से लेकर सब सभाएं सुनने का महा सौभाग्य प्राप्त होता रहा। सभी सभाएं एक से बढ़कर एक थी। इन सभाओं से मुझे बहुत लाभ हुआ है। इन दिनों जब मैं गुरू महाराज के ग्रन्थों का पाठ करता हूं तो एक अलग ही दुनियां दिखती नज़र आती है। पिछले महीने धर्म जीवन में भगवान देवात्मा की वाणी नेचर पर ''अटल विश्वास'' नामक लेख जो छपा था। उसको मैंने पहले भी कई बार पढ़ा परन्तु परसों मुझे फिर पढ़ने का मौका मिला। गुरू महाराज के यह शब्द कि जिस प्रकार एक-एक जुआरी जुए में अपना सब कुछ लगा देता है, आप भी परोपकार में अपना सब कुछ लगा दो। नेचर में आपकी अवश्य मदद होगी अगर परोपकार करते-करते आपको लगे कि हम रोटी से भी भूखे मर जाएंगे तो हमें तार दे देना, फिर हमारा यह कर्तव्य बनता है कि (आपका हृदय भरा हुआ था) हम अपने कपड़े लते बेचकर आपकी मदद करें। शब्द कुछ ऐसे ही थे

जिनको पढ़कर आंखों में कितनी देर तक आंसू जारी रहे, हृदय गुरू महाराज को धन्यवाद दे रहा था कि किस कदर भगवान मनुष्य को पर-सेवा में लगाने के लिए व्याकुल है। इन दिनों पाठ-विचार से इतना फायदा हो रहा है कि शब्दों में पूरा-पूरा ब्यान मेरे लिए सम्भव नहीं। इन सभाओं में बैठ कर मेरा एक भ्रम दूर हो गया है। पहले मैं समझता था कि मैं ईमानदारी की ज़िन्दगी जी रहा हूं। परन्तु माननीय श्रीमान डा. खेड़ा साहिब जी ने एक सभा में ईमानदारी के विषय में सभा करवाई। उस सभा को सुनकर व इन सभाओं में बैठकर मुझे लगा कि ईमानदारी की दुनियां बहुत ऊपर की दुनियां है। मैं ईमानदार नहीं हूं। इससे यह बात स्पष्ट है कि अगर धर्म में Basic alphabets ही नहीं आते तो धर्मवान होना व उस Category में शामिल होना मेरे लिए कैसे सम्भव है।

मेरे एक साथी ने कुछ ऐसी गलती की कि जिसके कारण उसके सम्बन्ध में नीच घृणा की चिन्ताएं चलने लगी। परन्तु गुरू महाराज की रोशनी में नज़र आया है कि भले ही उसने गलती की है परन्तु क्या मेरे से गलतियां नहीं होती? अगर मैं अपनी ग़लतियां को माफ कर रहा हूं व अपने आप को कोई सजा नहीं दे रहा हूं तो उनको बुरा-भला कहना व नीच घृणा की चिन्ताएं करना मेरे लिए कहां तक उचित हैं? मैं इसके लिए उनसे माफी मांगता हूं कि वह मुझे माफ कर दें। इन दिनों एक बात सामने आ रही है कि श्रीमान जी किस प्रकार इस उम्र में भी हमारे तक देवप्रभाव पहुंचाने के लिए व्याकुल है। अभी बाहर से आए है पूरी तरह Rest भी नहीं मिली फिर भी किस प्रकार संग्राम में लगे हुए है। यह उनका उपकार बार-बार नज़र आ रहा है। पहले तो मैं समझता था कि यह सब कुछ करना एक कर्मचारी का फर्ज है परन्तु अगर श्रीमान जी इस प्रकार संग्राम न करते तो ऐसी समाज का, ऐसे अद्वितीय गुरू का पता ही नही चलना था। यह जीवन बेकार चला जाना था। मेरे जिम्में जो काम लगाया गया था वह भी उचित ढ़ंग से नहीं निभा सका।

**श्रीमान गोपाल जीः –** बहुत रोया हूं, भजन सुनकर। पता नहीं कुछ कितना लाभ हुआ। मेरी नज़र बहुत मलीन थी। मेरी अवस्था कुछ बेहतर हो रही है। मैं गन्दी किताबें छुपा-छुपा कर रखता था। यहां लगता है कुछ भला हो सके। हमारे सारे परिवारों में मेल आ रहा है। पहले पिता जी की ईमानदारी बुरी लगती थी, अब उस पर गर्व हो रहा है। डा. साहिब की मदद से बहुत कुछ समझ आ रहा है। मेरी भाभी लोग बहनों की तरह दिखाई देने लगी हैं। मेरी इस तरह मदद होती रही तो मेरा और भला हो सकेगा।

**श्रीमती वीरपाल कौर जीः –** बहुत ही सम्मान व श्रद्धा के योग्य सभापति जी व धर्म सम्बन्धीयो! मुझे लगता है कि हम सभी ही जो सत्संग में बैठे हुए हैं बहुत ही सौभाग्यवान है। मुझे अपनी बहुत सी कमजोरियां दिखाई दी हैं। मैं अपने गुरू जी के आगे प्रतिज्ञा करती हूं कि अपनी इन कमज़ोरियों को दूर करूंगी व महोत्सव तक अपने गुरू के आगे पहले से बेहतर होकर बैठूंगी। खाने-पीने की जो सेवा पाई है, उसके लिए धन्यवादी हूं।

इसके बाद समय काफी हो चुका था। सभापति जी ने भगवान देवात्मा का, सहायकारी शक्तियों का, सभा करवाने वालों का, सभा सुनने वालों का, सेवा करने वालों का, धर्मशाला प्रबन्ध का, उनके मनेजर का, भजन गाने वालों का कि जिनकी कृपा से यह प्रोग्राम किसी अंश सफल रहा, धन्यवाद किया। इसके बाद आरती के गान के बाद जय ध्वनि करके यह सभा सम्पन्न हुई।

# शुभ संग्राम

**ट्रान्टो कनेडा में सभाएं :–** श्रीमान बलदेव सिंह जी ट्रान्टो निवासी साथी, विशेष करके श्रीमान बलवन्त राए जी (श्रीमती बलबीर कौर जी शर्मा के भाई) बीबी रीटा जी (सरदार साहिब श्रीमान भाई अतर सिंह जी ड्रोली भाई जी की बेटी बीबी महिन्द्र जी की पोती) श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी चहल आदि की जोरदार इच्छा को लेकर, इंडियाना पुलिस अमरीका से 12 अगस्त की दोपहर को यहां पहुंचे। आगे हवाई अड्डे पर श्रीमान बलवन्त राय जी, मोगे के गिल नौजवान श्री बाबू जी को साथ लेकर पहुंचे। कस्टम से बाहर आते ही इन साथियों ने खूबसूरत फूलों के बुके पेश करके व अति झुक कर प्रणाम करके स्वागत किया। जितनी खुशी का प्रकाश किया व धन्यवाद दिया, उस का ब्यान नहीं हो सकता। अपने नए शानदार घर में सब से उत्तम व बड़ा बैडरूम श्रीमान जी के लिए रिज़र्व किया हुआ था। उनकी धर्मपत्नी ने स्वादिष्ट खाना तैयार करके रखा हुआ था। खाना खिलाकर श्रीमान जी को आराम करने के लिए कहा। फिर उन्होंने लोगों को अपने घर सभा के लिए फोन करने आरम्भ कर दिये।

12 अगस्त शाम को एक छोटी सी सभा की गई। इसमें 8 जन हो गए। सभी से सवाल पूछ–पूछ कर श्रीमान जी ने सब को Involve करके सभा करवाई। इसमें बताया गया कि किस प्रकार नीच सुखों को बढ़ा कर इन्सान बर्बाद हो जाते है। उनके पूजा पाठ व धर्म साधन ऐसे के ऐसे ही धरे रह जाते है। छोटे बच्चों को प्रणाम सिखाने व बड़ों की आज्ञा पालन व सेवा की आदत डालने से उनका बड़ा हित हो सकता है। एक नौजवान को स. हरनाम सिंह जी का जीवन–चरित्र दिया गया।

13 अगस्त की शाम को फिर वहीं बाबू बलवन्त राए जी के घर सभा का प्रोग्राम रखा गया। इसलिए कई परिवारों के व्यक्ति 25–30 के करीब आकर शमिल हुए। बीबी रीटा जी सभी के खाने के लिए अच्छे पदार्थ खीर समेत बना कर साथ लाई। सबसे पहले चाय व जूस आदि के साथ मिठाई व समोसे आदि खिलाए। फिर सभी को बिठा कर श्रीमान जी ने सभा करवाई। सभा में श्रीमान जी हाजरीन को सवाल करके उसी सवाल का जवाब आप स्पष्ट करके पेश करते गए। सबसे पहले पूछा गया कि धर्म की क्यों जरूरत है? फिर पूछा गया कि धर्म क्या होता है? बताया गया कि नेक होने का नाम, अच्छे बनने का नाम, वा भले दयावान बनने का नाम ही धर्म है। भले व अच्छे इन्सान की क्या परख है? अगर हमारे सम्बन्ध मीठे हैं, परस्पर सेवा भरे हैं, तो यह सम्बन्ध स्वर्गीय होंगे। जो अच्छा बेटा है, अच्छा मां–बाप, अच्छा भाई, अच्छा पति या पत्नी, अच्छा पड़ोसी है, वही नेक व धार्मिक इन्सान है। फिर प्रश्न किया गया कि इन्सान बुरा व गन्दा क्यों बन जाता है? इसके जवाब में बताया गया कि नीच सुखों के बढ़ जाने से इन्सान लाजमी बुरा बन जाता है। वह दुखदायक

हो जाता है, आप दुख भोग कर बर्बाद होता है। फिर मनुष्य अच्छा, नेक व भला कैसे बन जाता है? उच्च भावों के पैदा करने से इन्सान अच्छा बन जाता है। सम्मान व नम्रता, शुक्रगुजारी व पर दु:ख के एहसास की भावनाएं इन्सान को ऊपर उठाती हैं। यह उच्च भाव, उच्च जीवनधारियों से, उनकी शरण से, सत्संग से प्राप्त हो सकते हैं। उचित उदाहरणों से सभी हाजरीन को यह बात स्पष्ट करने की कोशिश की गई। सभी जन बहुत प्रभावित हुए। आख़िर में श्री बलवन्त राए जी ने श्रीमान जी के आने की खुशी और धन्यवाद भरा पत्र पढ़ा व 101 डॉलर नकद मिशन के लिए धन दिया। फिर सब हाजरीन के लिए बहुत शानदार खाना श्री बलवन्त राय जी की पत्नी जी ने तैयार करके खिलाया। सभी ने वहीं मिल बैठ कर हार्दिक खुशी महसूस की। बीबी स्वीट अपने बेटे समेत सब से पहले काफी दूर से यहाँ पहुंच गई थी।

पुराने साथी सेवक मास्टर खुशी सिंह जी ढिल्लों के साहिबजादे बहुत खुशी का प्रकाश करते रहे। मोगे के नौजवान स. रणजीत सिंह जी गिॅल जो अपने सारे परिवार को 5-6 जनों के समेत लेकर शामिल हुए। उन्होंने अगले दिन अपने घर प्रोग्राम रखने के लिए कहा व आप श्रीमान जी ने ट्रांटो जहां भी जाना था, वहां ले जाने की सेवा उन्होंने खुशी-खुशी अपने जिम्मे ली।

इस प्रकार यह प्रोग्राम सभी के लिए हितकर साबित हुआ। जिस में शामिल हर व्यक्ति ही बहुत खुशी महसूस करके विदा हुआ। प्रोग्राम कोई 6:30 बजे से रात 11:00 बजे तक जारी रहा। यह सब कुछ श्री बलवन्त जी की हिम्मत से हुआ।

14-8-05 रविवार दोपहर का प्रोग्राम श्री रणजीत सिंह जी गिॅल मोगा के घर में रखा गया। यह नौजवान श्री सुखदेव सिंह जी गिॅल, पुराने पंजाबी टीचर, देव-समाज मोगा, के बेटे है। उन्होंने भी दोपहर को 25-30 अपने सम्बन्धियों को अपने घर खाने में बुलाया। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कृतज्ञता के सुन्दर भाव की जरूरत पर ब्यान किया। बहुत सारे हाजरीन मोगे के रहने वाले थे। सब ने मिल कर खुशी महसूस की। श्रीमान रणजीत सिंह जी ने 101 डॉलर समाज के लिए दान दिए। बलवन्त राय जी ने सभी जनों को धन्यवाद दिया व अपनी विशेष खुशी को प्रगट किया। श्री गिॅल जी के ताया जी सुबेदार साहिब व कर्नल साहिब Uncle ने भी शामिल होकर खुशी प्राप्त की। श्री रणजीत सिंह जी ने छुट्टी लेकर श्रीमान जी को ट्रांटो में जहां जाना भी था, अपनी कार में ले जाकर खुशी-खुशी सेवा की।

रात को प्रोग्राम बीबी रीटा जी, (जैसे कि पहले लिखा है) जो उच्च लोकवासी भाई साहिब भाई अत्तर सिंह जी ड्रौली के परिवार से सम्बन्धित है, उनकी बेटी बीबी महिन्द्र कौर जी की पोती है, ने बहुत चाव-भाव से पिछले साल की तरह अपने घर प्रोग्राम रखवाया।

वहां पर एक दर्जन के करीब जन आकर शामिल हुए। 2 घंटे से भी ज्यादा बात-चीत होती रही। श्रीमान जी ने रीटा की डाक्टर बच्ची को अलग बिठा कर English में सभा करवाई। उनका ध्यान अपने जीवन की तरफ ले जाने का यत्न किया। वह बहुत खुश हुई। रीटा जी, उनके पति व उनकी भावजा के परिवार ने हाजरीन की बहुत सेवा की।

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88


बहुत सत्कार से हाजरीन को चाय-मिठाई आदि व सुन्दर भोजन खिलाया। समाज के लिए रीटा जी ने 101 डॉलर दान में खुशी-खुशी दिए। काफी रात हो जाने पर श्रीमान जी व बलवन्त राए जी आदि वापिस घर पहुंच गए। 15 अगस्त शाम को श्रीमान जी, श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी चहल जी के पास पहुंच गए। अगले दिन सवेरे उनको बिठा कर दो घंटे के करीब उनको कई सच्चाईयां समझाने की कोशिश की गई। ब्रहमंड कैसे चलता है, सत्य की कसौटियां क्या है? वैज्ञानिक विधि किस ने खोजी है? परिवर्तन का नियम किस की खोज है? विकास का नियम किस ने जाना? आत्मा के अंग व उसकी गठन क्या है? उपरोक्त सब सभाओं में व पूछताछ करने पर उनको विधिपूर्वक उचित ढंग से जवाब दिया गया। चहल जी ने हजार रूपये दान दिया। उस दिन शाम को श्रीमान जी बीबी स्वीट के पास पहुंच गए। वहां पर वह 16 अगस्त व 17 की दोपहर तक रहे। स्वीट व उनके बेटे के साथ काफी हितकर बात होती रही। बच्चा समीर बहुत दिलचस्पी के साथ बहुत सवाल करता रहा। बहुत खुशी महसूस करता रहा।

17 तारीख को बीबी बीरबाला जी भी लगभग 1/2 घंटा वहां पर आकर मिल गई। 2 बजे श्रीमान जी को बीबी स्वीट Airport पर छोड़ गई।

इस प्रकार ट्रांटों का यह प्रोग्राम किसी अंश तक सफल हुआ। श्री बलवन्त राय जी व चहल साहिब बाद में भी फोन करके अपनी खुशी का प्रकाश करते रहे।

* * * * *

## महोत्सव मुबारक आ रहा है

पाठयगण यह जानकर खुशी महसूस करेगें कि इस बार परम पूज्नीय भगवान देवात्मा का 155वां शुभ जन्म महोत्सव 14 दिसम्बर 2005 बुधवार से 17 दिसम्बर शनिवार तक पूरे चाव-भाव से हर साल की तरह मनाया जाएगा। सब साथी सेवक अभी से उपरोक्त दिनों को ध्यान में रखने की कृपा करें और इन दिनों को अभी से सुरक्षित रख लें। याद रहे कि इस वर्ष महोत्सव के सब दिन Working Days हैं।

**-मंत्री**

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने* ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*